शोध मंथन, Impact Factor 6.726 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
1014 Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com/* https://doi.org/10.31995/shodhmanthan

मेरा सर्वांग दर्शन

डॉ. पी. के. दास
विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान,
CSSS डिग्री कॉलेज, माछरा, मेरठ उत्तर प्रदेश

सारांश

यह लेख एक लेखमाला का प्रारम्भ है। आगे लेखक भाशा एवं गणित के दर्शन तक पर लिखेगा। यह लेखमाला सोच एवं लेंखन के समन्वय पर आधारित है। ऊपर पहले विचारधारा एवं दर्शन के अन्तर की विवेचना की गई है, फिर विज्ञान और दर्शन की विधियाँ पर लिखा गया है। इस लेख में तथा इस लेख माले के आने वाले लेखों में पथ नीति पर बार–बार लिखा जायेगा, राजनीति दर्शन और भाषा दर्शन तथा विज्ञान दर्शन, अन्य विवेचित विषय है। यह एक वृहत दार्शनिक ग्रन्थ की शुरूआत है।

प्रस्तावना

मेरे जीवन की महत्वाकांक्षा छुटपन से ही यह थी कि मैं एक सर्वांग दर्शन दुनिया को दूँ, जिसमे कोई आन्तरिक विरोधावास न हो। इस दर्शन के कई उपदर्शन है। जैसे कि अर्थ दर्शन, राजनीतिक दर्शन, समाज दर्शन, व्यवहार का प्रारूप का मनोविज्ञान, वैज्ञानिक परोपकारवाद विचारधारा का दार्शनिक आधार, अन्य दर्शनों का समीक्षात्मक आलोचना, डिढफरेशिंयल रिर्यालज्म आदि। एक एक करके इस वृहद विषय पर मैं लिखता रहूँगा और एक व्यवस्थित ग्रन्थ का प्रकाशन अन्त में होगा। दार्शनिक विषयों पर इन पंक्तियों के लेखक की तेरह प्रकाशित पुस्तकें हैं।

द्वितीय, यह दूसरे दार्शनिक सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में स्वयं का मूल्यांकन कर सके; और इसमें न केवल परस्पर दर्शन का सभी शाखाऐं हो अपितु ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों को समन्वित किया जाये। ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों से अभिप्राय, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र इत्यादि विषयों से है। सिर्फ इस दर्शन के लिए एक शब्द हिन्दी में ''सर्वांग दर्शन'' है। उदाहरण के लिए महर्षि अरविन्द के दर्शन को सर्वांग दर्शन कहा जाता है। इसी तरह मार्क्सवाद भी एक सर्वांग दर्शन है।

यहाँ पर दर्शन तथा विचारधारा में अन्तर की विवेचना भी प्रासंगिक होगी। दर्शन सभी ज्ञान विज्ञानों का समन्वय है, और सभी वैज्ञानिक नियमों का अध्ययन कर सर्व–सामान्य नियमों का खोज करने का प्रयास करता है। हिन्दी शब्द विचारधारा, अंग्रेजी शब्द आईडियोलॉजी के हिन्दी अर्थ के रूप में प्रयुक्त होता है। कभी–कभी तो दर्शन और विचारधारा शब्द समानार्थक के रूप में प्रयुक्त होते हैं, परन्तु अधिकांशत्या दर्शन में ज्ञान विज्ञान के समन्वय को महत्व दिया

जाता है, जबकि विचारधारा में एक सामुहिक क्रिया रेखा पर जोर होता है। उदाहरणार्थ, समाजवादी, साम्यवादी, पूंजीवादी, विचारधाराओं पर सभी देशों में विभिन्न राजनीतिक दल कार्यरत है। दर्शन एक प्रकार से सर्वमिश्रित विषय है। जिस प्रकार शुद्ध पानी में भाँति–भाँति के शर्बत घोलकर भाँति–भाँति के पेय बनाए जा सकते हैं, उसी प्रकार सभी विषयों पर दार्शनिक रूप से विश्लेषण करके प्रत्येक विषय का दर्शन बनाया जा सकता है।

इस तरह के अनेक दर्शन पहले से ही अस्तित्व में है। उदाहरण के लिए राजनीतिक दर्शन या राजनीति का दार्शनिक आधार, अर्थ दर्शन या अर्थशास्त्र का दार्शनिक, आधार, समाज दर्शन या समाजशास्त्र का दार्शनिक आधार आदि ऐसे बहुप्रचलित, विषयों के शीर्षक हैं। सभी विषय तथा शास्त्र दर्शन से ही निकलते हैं, और दर्शन ही उसका सार होता है। महर्षि अरविन्द के दर्शन तथा कार्ल मार्क्स के दर्शन को सर्वांग दर्शन क्यों कहते हैं, यह हम पहले ही देख चुके हैं। प्रस्तुत पंक्तियें के लेखक डा० पी० के० दास तेरह पुस्तके लिख चुके हैं। अब वे महसूस करते हैं, अपने सभी विचारों को समेटकर एक सर्वांग दर्शन लिखा जाये। यह लेख माला इसी ओर प्रयास है।

महर्षि अरविन्द के दर्शन को सर्वांग दर्शन कहा जाता है। अभिप्राय यह है, दर्शन की सभी महत्वपूर्ण समस्याओं की इन्होंने विवेचना की है। विचार धाराएं अधिकांश दृष्टांतों में दर्शन पर आधारित होता है। यहां पर दर्शन और विचारधारा के अन्तर को समझ लेना समिचीन होगा। दर्शन को ज्ञान के प्रति प्रेम सम्यक दृष्टि, सभी ज्ञान विज्ञान के समन्वय, आदि परिभाषाओं द्वारा परिभाषित किया गया है। मेरे दर्शन को अध्यापक अंग्रेजी में कहते थे– "Philosophy also is defined as guide to life and art of living. In Indian philosophy all the three aspects of behavior, cognitive, curative and affective are included in the word "Darshan" and "Philosophy" are not synonyms. जहाँ पाश्चात्य शब्द Philosophy में जोर Behaviour के ज्ञानात्मक पक्ष पर है, वहीं भारतीय दर्शन की अवधारणा में, ज्ञानात्मक, कार्यात्मक, भावात्मक, व्यवहार और आत्म साक्षात्कार की चेष्टा चारों पर जोर डाला गया है। वर्तमान सन्दर्भ में दो शब्दों दर्शन तथा Philosophy में भेद करने की कोई आवश्यकता नहीं, अपितु उन्हें समानार्थी के रूप में प्रयुक्त किया गया है। भौतिक शास्त्र में Grand Unification Theory भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होती है।

1. दर्शन व विज्ञान की पद्धति

यद्यपि दर्शन व विज्ञान की पद्धतियाँ अलग–अलग हैं, परन्तु उनमें कुछ साम्य भी हैं। एक दार्शनिक के व्यक्तिगत जीवन धारा को जाने बिना, उनके समग्र क्रितियों को मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। किसी दार्शनिक की व्यक्तिगत जीवनी और उसकी ऐतिहासिक परिस्थितियाँ दोनों महत्वपूर्ण है। दर्शन को विज्ञानों के विज्ञान के रूप में परिभाषित की गई है। यह सभी विज्ञानों के समन्वयात्मक निचोड़ भी है। विज्ञान की पद्धति तथ्यात्मक आँकड़ों को संकलित करके, उनका विश्लेषण करना है। दर्शन को काल्पनिकता का विज्ञान भी कहा गया है। दार्शनिक वर्गों को यदि गणितीय विश्लेषित किया जा सके और उनमें परस्पर कार्य–कारण सम्बन्ध स्थापित किया जा सके तो दर्शन भी विज्ञान की श्रेणी में आ जाती है। भौतिकशास्त्र को अनेक वैज्ञानिक

तब तक अधूरा मानते हैं, जब तक उसके प्रत्यों और चरों का मापन न किया जा सके। मापन के लिए उपकरण तथा गणित का ज्ञान दोनों आवश्यक है।

2. राजनीतिक अर्थशास्त्र के सम्प्रत्त्यय तथा परोपकारवाद

किसी एक राजनीतिक व्यवस्था से सम्बद्ध अर्थ व्यवस्था के कई पहलू होते हैं। यह उत्पादन, व्यापार, वैज्ञानिक सम्बन्धों, रीति–रिवाजों, परम्पराओं, राष्ट्रीय आय के वितरण आदि से सम्बन्धित होती है। इस विषय को राजनीतिक अर्थशास्त्र (पौलिटीकल इकौनौमी) कहा जाता है। राजनीतिक अर्थशास्त्र का प्रारम्भ अट्ठारवी शताब्दी में हुआ। राजनीतिक अर्थशास्त्र के अर्थ अलग–अलग सन्दर्भो में भिन्न–भिन्न हैं, एक विषय के रूप में राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी, अर्थशास्त्र, पब्लिक चायस एप्रोच, शिकांगो तथा वर्जीनिया स्कूल), अर्थशास्त्रीयों द्वारा सरकार या जनता को दिए गए, अर्थनीति सम्बन्धित सुझाव आदि कुछ भी हो सकता है।[1] अब विकास की दिशा, अर्थनीति प्रारूप से व्यक्ति केन्द्रित उपयोगिता की ओर है। किस तरह राजनीतिक शक्तियाँ वितरणात्मक अन्तसंघर्ष तथा राजनीतिक संस्थाओं के आन्तरिक मंच पर आर्थिक विवाद को प्रभावित करती है, भी अध्ययन के विषय हैं। अर्थव्यवस्था में आने वाले परिवर्तन समाज पर भी प्रभाव डालते हैं। इस प्रभाव क्षेत्र को दो कालों में विभावित किया गया हैः– (1) शास्त्रीय कला तथा (2) समकाल। हमारे समय की एक ओर मुख्य अवधारण ''सामाजिक पूंजी'' है।[2] सामाजिक पूजी सामाजिक समूह के दक्षतापूर्ण व्यवहार को सूचित करती है। सामाजिक पूंजी के अन्तर्गत सुधरे हुए, अर्न्तव्यक्तित्व सम्बन्ध, तादात्मकता में बेहतर भागीदारी, बेहतर समझ, प्रमांकों में अर्न्तदृष्टि, मूल्यों पर चलना, विश्वास, सहयोग, पूरकता, आदि आते हैं। यह अवधारणा मानवीय पूंजी की अवधारणा के भी समतुल्य हैं। समाज कल्याण के लिए समाजकल्याण प्रारूप का अलग से निर्माण किया जा सकता है। यह मूल्य अवस्था से सम्बन्धित होती है। समाज कल्याण योजनाओं तथा समाज कल्याण प्रावधानों का परोपकारीवादी समाज में लाभ प्रत्येक व्यक्ति उठाएगा। सामाजिक नीतियां इस हेतु बाजार और मिश्रित अर्थव्यवस्था दोनों के लिए बनाई जा सकती है।

इससे एक मिलती जुलती, अवधारणा आर्थिक विचारधारा की है। जहाँ, आर्थिक सिद्धान्त एप्रोच सकारात्मक (पाजिटिव विस्तिक) होती है, आर्थिक विचारधारा का एप्रोच नियामक (नौरमेटिव) होती है। अर्थव्यवस्था मानवता का अनिवार्य अंग है। प्रागैतिहासिक मानव शास्त्र को अंग्रेजी में ऐन्थ्रोपोलाजी कहते हैं। प्रागैतिहासिक युग की अर्थव्यवस्था का अध्ययन मार्क्सवादी और गैरमार्क्सवादी दोनों दृष्टिकोणों से की गई है।

Reference

1. Groenwegen, Peter [1987 (2008)]. *"Political Economy and Economics",* The New Palgrave : A Dictionary of Economics V.Z pp **905-06 (pp 904-07).**
2. Wikipedia, Economic Sociology.